दैनिक जागरण
MARCH 12, 2011

जापान जैसा भूकंप आता तो नष्ट हो जाती दिल्ली

अनुमान

- भूकंप के लिहाज से जोन-4 में शामिल है दिल्ली
- पर्यावरण में बदलाव से भूकंप के केंद्रों में भी आ रहा बदलाव

नई दिल्ली, जागरण संवाददाता : जापान में 8.9 रिएक्टर तीव्रता का भूकंप आया है। अगर ऐसा भूकंप दिल्ली में आता तो दिल्ली नष्ट हो जाती। यह कहना है कि डीयू के भूगर्भ विशेषज्ञ डॉ. एसके सिंह का।

उन्होंने कहा कि वहां की इमारतें अच्छी गुणवत्ता की बनी हैं, जो मजबूती के साथ लचीलापन भी लिए हुए हैं। वे हिलकर फिर से सीधी खड़ी हो सकती हैं। लेकिन दिल्ली की इमारतों को इस पैमाने के भूकंप झेलने लायक नहीं बनाया गया है। हिमालय पर्वत का निर्माण हिमालयन और यूरेशिया प्लेट के टकराने से अभी भी जारी है। उत्तरी क्षेत्र में आने के कारण भूकंप के लिहाज से दिल्ली जोन-4 में शामिल है। इसलिए यह संवेदनशील है। पर्यावरण में बदलाव के चलते भूकंप के केंद्रों में भी बदलाव आ रहा है। ऐसा प्लेटों के खिसकने के कारण हो रहा है। भूकंप के खतरे को भांपने के लिए पैमानों में भी बदलाव आया है। उन्होंने कहा कि मोटे तौर पर अब भूकंप से नुकसान के तीन पैमाने सुनिश्चित हैं। पहला भूकंप की तीव्रता, दूसरा समय अंतराल क्योंकि अमूमन भूकंप 35 से 40 सेकेंड का आता है। अगर यही भूकंप दो मिनट का हो गया तो प्रलय आ जाएगी। तीसरा, क्षेत्र या देश की आर्थिक-सामाजिक स्थिति क्योंकि समृद्ध व्यक्ति या देश हमेशा अच्छी गुणवत्ता वाली इमारतों का निर्माण करते हैं। डीडीए के पूर्व टाउन प्लानर आरजी गुप्ता का कहना है कि दिल्ली का विकास बहुत ही बेढंगे तरीके से हुआ है। यहां कॉलोनियों का निर्माण काफी सघन है। साथ ही अवैध निर्माण से राजधानी मौत के ढेर पर खड़ी है। राजधानी की दो-तिहाई आबादी अवैध रूप से निर्मित मकानों में रह रही है। हाल ही में बिना भूकंप के ही लक्ष्मी नगर में गिरी इमारत भवनों की गुणवत्ता पर प्रश्नचिन्ह खड़े करती है।

जापान में भूकंप पर्यावरण में असंतुलन का इशारा

- जेएनयू के प्रो एस मुखर्जी ने बताया भूकंप व तेज लहरें उठने का कारण

प्रो. एस मुखर्जी

नई दिल्ली, जागरण संवाददाता : जापान में भूकंप के तेज झटके और समुद्री लहरों का 13 फुट तक ऊंचा उठना पर्यावरण में असंतुलन की ओर इशारा करता है। करोड़ों वर्षों से पृथ्वी का निर्माण चल रहा है। अब भी जमीन के नीचे खौल रहे लावे की सतह पर छोटी-बड़ी कुल मिलाकर 10 प्लेटें अलग-अलग दिशाओं में तैर रही हैं। इनके टकराने से भूकंप के साथ समुद्र में कई फुट ऊंची लहरें उठती हैं। विध्वंस से बचाव के लिए जरूरी है कि इमारतों का निर्माण ईमानदारी से हो। यह कहना है जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के स्कूल ऑफ इन्वायरमेंटल साइंसेज के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. एस मुखर्जी का। उन्होंने कहा कि मानचित्र पर जापान की बनावट देखकर ही स्पष्ट है कि वह चट्टानों पर बसा देश है। लेकिन वहां लोगों ने इमारतों का निर्माण ईमानदारी से किया है। इससे वहां भूकंप के कारण जन-जीवन की क्षति कम ही होती है। लेकिन सुरसा की तरह मुंह बाए प्रलयकारी लहरें कहीं भी कोहराम मचा सकती हैं। द्वीपों पर बसे इस देश में पहले भी कई बार भूकंप व तेज लहरें आ चुकी हैं। जापान में भूकंप आने का कारण चार प्लेटों की सक्रियता है। यह प्लेट हैं पैसिफिक, यूरेशिया, फिलिपाइन और नॉर्थ अमेरिकन। पैसिफिक प्लेट पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर, यूरेशिया प्लेट पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर, फिलिपाइन प्लेट उत्तर से पश्चिम की ओर और नॉर्थ अमेरिकन प्लेट उत्तर से दक्षिण की ओर चल रही हैं। जब भी इन प्लेटों में टकराव होता है तो टकराव के केंद्र से जुड़े देश में भूकंप आता है। जापान में कई बड़े भूकंप आ चुके हैं। जापान में 1923 में आए भूकंप का केंद्र कांतो था, 1948 में फुकुई, 1953 में टोकाची ओकी और 1993 में ओकुश्री आईलैंड था।

R.G GUPTA
POLICY/CITY PLANNER